

आर्थिक अवसंरचनायें - परिवहन व संचार

(अ) परिवहन

अर्थ : परिवहन से अभिप्राय मनुष्यों व वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाना होता है। यह विभिन्न स्थानों को आपस में जोड़ने का प्रयास करता है। इसकी तुलना में मानव शरीर में रक्त नलिकाओं से की जा सकती है।

हिमाचल प्रदेश की विशिष्ट दशा

हिमाचल प्रदेश एक पहाड़ी राज्य है। अधिकांश जनसंख्या 11,000 फुट की ऊंचाई पर स्थित 16916 गांवों में निवास करती हैं। स्पष्ट है कि गांव बहुत छोटे-छोटे व एक-दूसरे से बहुत अधिक दूरी पर बसे हुए हैं। बीच में खड्ड व पहाड़ियां हैं। भौगोलिक स्थिति के कारण सभी गांवों को आपस में जोड़ना न केवल कठिन है वरन् अत्यधिक खर्चीला भी है। इन परिस्थितियों में परिवहन सेवाओं का दायित्व कठिन एवं चुनौतीपूर्ण है। परन्तु उत्पादन एवं वितरण की आर्थिक गतिविधियों को तेज करने के लिए अत्यावश्यक भी है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए राज्य के गठन के समय से ही परिवहन को उच्च प्राथमिकता दी गई है।

परिवहन का आर्थिक महत्त्व

आज के युग में उत्पादन, विनिमय व वितरण की सारी प्रक्रिया तेज गति वाले परिवहन के साधनों पर निर्भर है। हिमाचल के सन्दर्भ में इनका महत्त्व निम्न बातों के माध्यम से दर्शाया गया है।

पर्यटन का विकास : हिमाचल जैसे पहाड़ी राज्य का आर्थिक विकास पर्यटन के विकास पर निर्भर होता है। देश विदेश से लाखों यात्री सैर-सपाटा करने आते हैं। ये तभी आयेंगे यदि अच्छी सड़कें व आरामदायक गाड़ियां होंगी। साथ ही देश विदेश से हवाई मार्ग भी खुले हों।

(2) बागवानी का विकास : बागवानी में फलों का उत्पादन किया जाता है। ये शीघ्र खराब होने वाली वस्तु हैं। सेब किन्नौर, शिमला, कुल्लू, चम्बा आदि में पैदा होता है तथा दूर दिल्ली, बम्बई व कलकत्ता के बाजारों में बिकता है। ऐसा तभी सम्भव है जब उत्पादक क्षेत्रों में अच्छी परिवहन सुविधा हो ताकि फलों व सब्जियों की पैदावार को शीघ्रतिशीघ्र खपत की मंडियों में पहुंचाया जा सके।

(3) उद्योगों का विकेन्द्रीयकरण : देश का सन्तुलित विकास करने व लोगों को उनके घरों के नजदीक रोजगार देने के लिए उद्योगों का विकेन्द्रीयकरण किया जा रहा है। कच्चा माल पैदा करने वाले क्षेत्र, उत्पादन करने वाली इकाइयां व खपत की मंडियां अलग-अलग दूर क्षेत्रों में स्थित होती हैं। इनका उपयोग तभी हो सकता है जबकि अच्छी परिवहन व्यवस्था हो।

(4) खनिजों का विकास : खनिज पदार्थों को कारखाने तक ले जाने के लिए सड़कों की आवश्यकता है। हिमाचल अपने चूने का पत्थर सीमेंट कारखानों तक तभी पहुंचा पायेगा जब उन भागों में सड़कें हो।

(5) जल-विद्युत क्षमता का विकास : जल-विद्युत क्षमता का उपयोग करने के लिए भारी मशीनें व श्रमिकों को जल-विद्युत उत्पादन केन्द्र तक ले जाना होता है। ऐसा परिवहन सेवाओं के विकास के बिना सम्भव नहीं।

(6) **वानिकी का विकास** : वनों के अन्दर से लकड़ी व अन्य उत्पादों को निकाल कर बाजार तक लाना होता है। ऐसा तभी सम्भव है जब वनों के बीच सड़कों का विकास किया जाये। तभी हम मशीनी वाहनों द्वारा वन उत्पाद का कम लागत पर निकास कर सकते हैं।

(7) **व्यापार का विकास** : व्यापार में वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाया ले जाया जाता है। हिमाचल में पहले यह कार्य मानव शरीर पर या घोड़े द्वारा किया जाता था। सड़क व रेल मार्ग के विकास पर ही व्यापार का विस्तार निर्भर होता है। जितनी अधिक सड़कें बन रही हैं उतना ही अधिक व्यापार बढ़ रहा है।

दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि कृषि बागवानी, वानिकी उद्योग, व्यापार, पर्यटन को तब तक बढ़ावा नहीं दिया जा सकता जब तक कि वहां पहले आने-जाने के साधनों का विकास न हो।

परिवहन के साधन

हिमाचल प्रदेश में परिवहन के साधन निम्नलिखित हैं (i) वायु मार्ग (ii) रेल मार्ग (iii) सड़क मार्ग अन्य

रेल मार्ग : इस समय राज्य में तीन मार्गों पर रेल सेवा चल रही है। कालका-शिमला रेल मार्ग पहली रेल लाइन है। इसकी लम्बाई 96 कि०मी० है। शिमला जब अंग्रेजों के समय भारत की राजधानी थी उसे कालका से रेल मार्ग द्वारा जोड़ा गया था। यात्री परिवहन के अलावा यह शिमला, सोलन व किन्नौर के आलू व सेब की ढुलाई भी करती है। यह छोटी लाइन है। यह 1903 में बनी तथा जनता के लिए 1906 में खोल दी गई। इस पर 1.75 करोड़ रुपया व्यय हुआ था। इस पर 102 सुरंगें हैं। सबसे लम्बी सुरंग बड़ोग (सोलन) में 1144 मी० लम्बी है।

पठानकोट व जोगेन्द्र नगर को जोड़ने वाली दूसरी रेल लाइन भी छोटी लाइन है। इसका निर्माण जोगेन्द्र नगर में मण्डी पावर हाऊस बनाने के उद्देश्य से किया गया था। इसके द्वारा मण्डी व कांगड़ा की घनी आबादी वाले क्षेत्र को पंजाबी मैदानी भागों से जोड़ा गया है। इस मार्ग का स्थानीय लोगों के अलावा यू.पी., हरियाणा के लोग भी कांगड़ा-ज्वाला जी आने के लिए उपयोग करते हैं। इस मार्ग की लम्बाई 113 कि०मी० है। 16 कि०मी० लम्बी नंगल से ऊना के बीच बड़ी लाइन पर आवागमन 1990-91 में शुरू किया गया है। इसे तलवाड़ा तक बढ़ाया जायेगा। यह मार्ग ऊना जिले के आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त करेगा। ऊना-मेहतपुर में बहुत से उद्योग स्थापित हो रहे हैं। इसी तरह तलवाड़ा के पास संसारपुर टैरेस में भी औद्योगिक बस्ती स्थापित हो रही है।

रोपड़ के पास से वेहरामपुर-बिलासपुर-रामपुर तथा बिलासपुर-मण्डी के बीच बड़ी लाइन बिछाने के काम का सर्वेक्षण हो गया है। इस मार्ग के बन जाने से राज्य में सतलुज व ब्यास नदियों के बेसिन में जल-विद्युत परियोजनाएं बनाने में बहुत सहायता मिलेगी।

वायु मार्ग : राज्य में वायु मार्ग की बहुत कमी है। हिमाचल में पर्यटकों को बड़ी संख्या में भुन्तर में एक वायु सेवा का कोई विकल्प नहीं। शिमला के लिए जुब्बर-हट्टी में एक हवाई अड्डा बनाया गया है। यह मई 1987 में चालू कर दिया गया। इससे अब हिमाचल की राजधानी वायु मार्ग द्वारा देश के अन्य भागों से जुड़ गई है। कांगड़ा घाटी में धाधला के नजदीक गगल में भी हवाई अड्डा बन गया है और मई, 1990 से उसे चालू कर दिया गया है। अब हिमाचल को चण्डीगढ़ व दिल्ली से वायु सेवा द्वारा जोड़ दिया गया है। ये पर्यटन उद्योग को बढ़ावा मिलेगा।



Sky Line Rope-way in Remote Forests

राज्य के दूर दराज व जन जातीय क्षेत्र को भी वायु सेवा से जोड़ने का काम किया जा रहा है। अभी तक डोडरा कवार, काजा, केलांग, किलाड़, रोहडू, वैकूफर, ताबो, रामपुर व छराबड़ा में हैलीपैडों का निर्माण हो चुका है। भरमौर, रंगरीक व चम्बा में इनके निर्माण का कार्य चल रहा है। यहां हैलीकॉप्ट सेवा चालू की गई है ताकि इन भागों का राज्य के अन्य भागों से लगातार सम्पर्क बना रहे।

सड़क मार्ग : हिमाचल प्रदेश में परिवहन के क्षेत्र में सड़क परिवहन का स्थान सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इसी के द्वारा जन साधारण खुद व अपने माल को एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाता ले जाता है। चूँकि रेल व वायु परिवहन अति सीमित है, अतः परिवहन का मुख्य कार्य सड़क मार्ग द्वारा ही किया जाता है। मार्च, 1958 में राज्य में प्रति 100 कि०मी० क्षेत्र में औसतन 40.3 कि०मी० लम्बी सड़कें थीं जबकि समस्त भारत का औसत 56 कि०मी० है। केरल में सबसे अधिक 322 कि०मी०, पंजाब व

हरियाणा में क्रमशः 101 व 58 कि०मी० है। पहाड़ी राज्य त्रिपुरा में 106 कि०मी० है। हिमाचल में रेल मार्ग नगण्य होने से सड़क ही मुख्य साधन है।

सड़कों की प्रगति : हिमाचल प्रदेश के गठन के समय राज्य में कच्ची-पक्की सिर्फ 288 कि०मी० लम्बी सड़कें थीं। इसकी तुलना में 1992 के अन्त तक राज्य में मोटर चलने योग्य लगभग 17250 किलोमीटर लम्बी सड़कें बन चुकी हैं। इनमें राष्ट्रीय राजमार्ग, सामयिक महत्त्व के मार्ग, राज्य उच्च मार्ग व सम्पर्क मार्ग शामिल हैं। इससे राज्य में सड़कों का घनत्व प्रति 100 वर्ग कि०मी० में लगभग 40 कि०मी० हो गया है। दो वाहन साथ-साथ चलाने योग्य अभी लगभग 2000 कि०मी० ही है। इसी तरह तारकोल वाली पक्की सड़कें भी करीब 6000 कि०मी० लम्बी हैं। शेष सड़कें कच्ची हैं व एक साथ वाहन चलने योग्य (सिंगल लेन) हैं। बहुत सी सड़कों पर पुल नहीं हैं जिससे बरसात में उन पर वाहन नहीं चलाये जा सकते। सड़क के दोनों ओर नालियां भी बनाई जा रही हैं। लगभग 6000 कि०मी० लम्बी सड़कों के साथ ये नालियां बनाई जा चुकी हैं।

इन सड़कों से राज्य मुख्यालय शिमला को सभी जिला मुख्यालयों से जोड़ दिया गया है। जिलों को उपमण्डल व तहसीलों से जोड़ दिया गया है। 1990 तक निम्नतम आवश्यकता कार्यक्रम के अधीन 500 और उससे अधिक आबादी वाले सभी गांवों तथा 200 और उससे अधिक आबादी वाले 50 प्रतिशत गांवों को सड़क से जोड़ देने का लक्ष्य रखा गया था। यद्यपि राष्ट्रीय स्तर पर सभी गांवों को सड़क से जोड़ने का प्रावधान है परन्तु हिमाचल प्रदेश में यह सम्भव नहीं क्योंकि यहां 4463 ऐसे गांव हैं जो दूर-दूर ऊंची पहाड़ियों की ढलानों पर बसे हैं। इनकी आबादी भी बहुत कम है। यहां मोटर चलने योग्य सड़क बनाने से बड़े पैमाने पर लहसासे गिरने तथा प्राकृतिक सन्तुलन के बिगड़ने का भय है। अतः एक किलोमीटर की अर्द्ध व्यास में 100 मीटर ऊंचाई के अन्तर पर बसे सभी गांवों को एक गांव समूह मानकर सड़क योजना तैयार की गई है।

भावी सम्भावना व कार्यक्रम : उपरोक्त मानदण्ड के आधार पर हमें हिमाचल के 12,330 गांव को (4463 दूर-दराज बसे गांवों को छोड़कर) वाहन योग्य सड़क से जोड़ने के लिए राज्य में 26,400 कि०मी० लम्बी सड़कें चाहिए। तब सड़कों का घनत्व प्रति 100 वर्ग कि०मी० क्षेत्र में 47.35 कि०मी० होगा। इसके लिए राज्य में 1800 राज्य उच्च मार्गों व सम्पर्क मार्गों पर काम या तो समाप्त हो चुका है या फिर चालू है। फिर भी अभी 9600 कि०मी० लम्बी सड़कों का निर्माण बाकी है। इनके अलावा सड़कों के दोनों ओर पक्की नालियां व पुलों का निर्माण तथा सारी सड़कों पर रोलिंग का काम आवश्यक है ताकि उन पर वर्ष भर वाहन चल सकें। इसके साथ ही कम से कम आधी सड़कों को तारकोल से पक्की करना भी आवश्यक है। इन कार्यों के पूरा होने पर हम राज्य में आर्थिक विकास के लिए एक अति महत्वपूर्ण सहायक संरचना कर पायेंगे।

रज्जू मार्ग : दूर दराज के क्षेत्र जहां आबादी बहुत कम बिखरी है वहां वानिकी व बागवानी की पैदावार को सड़क तक कम लागत पर पहुंचाने के लिए रज्जू-मार्ग बनाये गये हैं तथा ऐसे अन्य मार्गों पर काम चालू रहेगा। सेब बहुल्य क्षेत्रों में ऐसे मार्ग काफी संख्या में बने हैं तथा अन्य भी बनेंगे। इनसे जंगलों से लकड़ी को निकालने में भी बहुत सहायता मिलती है। 1991-92 में रज्जू मार्ग के निर्माण पर 50 लाख रुपए व्यय किये जाने का प्रावधान है।

कार्यशाला : बसों की मुरम्मत के लिए एक आधुनिक कार्यशाला जसूर में है तथा दो मण्डलीय कर्मशालायें शिमला व मण्डी में कार्यरत हैं।

पथ-परिवहन निगम : सन् 1990-91 में हि०प्र० पथ परिवहन निगम 1400 मार्गों पर 1525 बसों के काफिले से परिवहन सेवा उपलब्ध करा रहा है। ये बसें प्रतिदिन लगभग 25 लाख कि०मी० यात्रा करती हैं।

(ब) हिमाचल प्रदेश के संचार साधन

संचार साधनों से अभिप्राय: उन साधनों से है जिनके माध्यम से हम सूचनाओं व समाचारों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेज सकते हैं। व्यापार व उद्योग का विकास तो एक बड़ी सीमा तक इन माध्यमों पर निर्भर करता है। सैनिक क्षेत्रों में व युद्ध स्थल से भी द्रुत समाचार संग्रहित किए जाते हैं। योजनाबद्ध विकास में तो इनका महत्त्व और भी बढ़ गया है। कृषि के सम्बन्ध में मौसम की जानकारी तापमान व वर्षा की सूचना, कृषि सम्बन्धी नई जानकारी का कम खर्च व बहुत कम समय में पहुंचना अति आवश्यक है। कभी-कभी तो नई तकनीक का प्रदर्शन भी इनके द्वारा किया जाता है। परिवार कल्याण व विज्ञापन में इन साधनों का प्रयोग अति महत्त्वपूर्ण है। आजकल शिक्षा भी संचार माध्यमों द्वारा प्रदान की जा रही है।

डाक, तार, टेलीफोन, टेलेक्स व समाचार पत्र समाचारों के आदान-प्रदान के बहुत-प्रचलित व आम साधन हैं। रेडियो व दूरदर्शन इलैक्ट्रॉनिक माध्यम हैं जिन पर सरकार का नियन्त्रण होता है। विज्ञान व तकनीक की उन्नति के कारण अब उपग्रह द्वारा भी समाचार इकट्ठे किये जाते हैं व प्रसारित किए जाते हैं। वायरलेस, प्रशासन व सेना के समाचारों का प्रमुख स्रोत है।

डाक-घर : हिमाचल प्रदेश में भारत के अन्य भागों के साथ ही आधुनिक डाक प्रणाली के प्रारम्भ होने का अनुमान है। यह प्रणाली लार्ड डल्हौजी के समय अपनाई गई है। वे चम्बा के डल्हौजी नगर में रहते थे अतः डाक प्रारम्भ में यहां से आती-जाती होगी। लाहौर जैसे दूर दराज के क्षेत्र में भी 1889 में पहला डाक घर खुल गया था। यहां कुल्लू से सप्ताह में दो बार डाक आती जाती थीं। 1948 में हिमाचल के गठन के बाद डाकघरों का विस्तार बहुत तेजी से हुआ है। 1989 तक राज्य में करीब 2500 डाक घर काम कर रहे हैं।

तार : तार द्वारा सूचनायें शीघ्र भेजी जा सकती है। तार प्रायः मोर्स प्रणाली द्वारा सांकेतिक भाषा में किया जाता है। परन्तु अब कुछ जगहों पर टेलीफोन द्वारा भी तार ग्रहण किये जाते हैं व प्रेषित किये जाते हैं। जन जातीय व दूर दराज के ऊंचे पहाड़ी भागों में तार व्यवस्था करना आर्थिक रूप से वांछित नहीं होता क्योंकि उसमें तार के खम्बे व तार लगानी पड़ती है जिस पर बहुत व्यय होता है। आबादी कम होने व बिखरी होने से यह माध्यम जन जातीय व ऊंचे क्षेत्रों के लिए अनुकूल नहीं। राज्य के शेष जिलों में 1989 तक 666 तार घर काम कर रहे हैं। जिला स्तर पर टेलीप्रिन्टर भी उपलब्ध हैं।

टेलीफोन : टेलीफोन आजकल एक आधुनिक व बहुप्रचलित संचार माध्यम है। टेलीफोन केन्द्र या तो मानव द्वारा संचालित होते हैं या फिर इलेक्ट्रॉनिक मशीनों द्वारा। इसके द्वारा सूचना लेने व देने वाले टेलीफोन द्वारा सीधा सम्पर्क स्थापित कर बातचीत कर सकते हैं। व्यापार व उद्योग तथा सरकारी कामकाज में इसका प्रयोग अत्यधिक तेज गति से बढ़ रहा है। हिमाचल प्रदेश में अब इलैक्ट्रॉनिक एक्चेंज तेजी से बनाये जा रहे हैं ? इनके द्वारा सीधा डायल घुमा कर बातचीत हो सकती है। जिला मुख्यालयों की राजधानी व देश के अन्य भागों से सीधे सम्पर्क प्रणाली एस.टी.डी. व फैक्स द्वारा जोड़ दिया जाता है। इससे दो पक्षों में सम्पर्क स्थापित होने में समय नष्ट नहीं होता। 1989 तक राज्य में 290 टेलीफोन एक्सचेंज काम कर रहे थे। चम्बा, धर्मशाला, शिमला, मंडी इनके प्रशासनिक केन्द्र हैं।

वायरलेस : इस प्रणाली में तार से स्थानों को जोड़ने की आवश्यकता नहीं होती। अतः जन जातीय व दूर दराज व ऊंची जगह पर बसे क्षेत्रों के लिए यही एकमात्र शीघ्र समाचार प्रेषित करने का माध्यम है। राज्य के किन्नौर, लाहौर स्पति व पांगी में वायरलेस ही संचार का प्रमुख साधन रहा है। किन्नौर में यह सुविधा कल्पा, पिओ, यांगथोग, पूह, मूरंग, सांगला, निचार व टापरी में उपलब्ध है। लाहौर-स्पति जिले में कोसकर, कैलांग, उदपुर व काजा में तथा चम्बा जिले में भरमौर, तीसा व किलार में वायरलैस की सुविधा उपलब्ध है। राज्य के अन्य जिलों में भी पुलिस स्टेशनों पर यह सुविधा उपलब्ध है।

उपग्रह : किन्नौर व लाहौर-स्पति के आर्थिक विकास के लिए वायरलैस के अलावा व्यापारिक व व्यावसायिक काम के लिए सीधे सम्पर्क की अति आवश्यकता थी। अतः उपग्रह के द्वारा कैलांग व कल्पा में रेडियो टेलीफोन व्यवस्था स्थापित की गई है। अब इन जगहों से कहीं भी टेलीफोन पर समाचारों का आदान-प्रदान किया जा सकता है।

समाचार-पत्र : समाचार पत्र देश विदेश के बहुत से समाचारों के अलावा स्थानीय समाचार भी देते हैं। व्यक्तिगत समाचार तथा विवाह शादी के लिए वर-वधू की खोज, ज़मीन या मकान जैसी सम्पत्ति, कार आदि खरीदने बेचने की सूचनायें तथा विविध प्रकार के विज्ञापन इन समाचार पत्रों में होते हैं। सिनेमा, टेलीविज़न रेडियो के कार्यक्रम के अलावा रोज़गार व व्यापारिक समाचार भी होते हैं। विभिन्न मंडियों के भाव व शेरों के अब दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित होते हैं। इनका प्रचलन बहुत बढ़ गया है। शहरों में तो प्रायः उठते ही पहला कार्य अखबार पर एक नज़र डालना होता है। पत्रिकाएं, कृषि बागवानी, वानकी, बैंकिंग व विकास सम्बन्धी जानकारी बहुत कम कीमत में राज्य के कोने-कोने में पहुंचाती है।

रेडियो : इस शताब्दी के छठे व सातवें दशक में रेडियो व ट्रांजिस्टर राज्य के गांव-गांव में पहुंच गये थे। आठवें दशक में तो यह सड़क के किनारे काम करने वालों या खेत में हल चलाने वालों के पास रखा हुआ देखा जा सकता था। लोगों के सामाजिक, व्यापारिक, व्यावसायिक व पारिवारिक दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने वाला यह सर्वाधिक सशक्त माध्यम रहा है। साथ ही मनोरंजन व दूसरी जानकारी प्रदान कर यह लोगों को कम लागत व शीघ्रता से शिक्षित करने में सक्षम रहा है। राज्य के किसानों को महत्वपूर्ण जानकारी व नई तकनीक को फैलाने में इसने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। शिमला में आकाशवाणी केन्द्र है जहां राज्य अपने निजी कार्यक्रम भी तैयार करता है व राष्ट्रीय कार्यक्रम भी प्रसारित करता है। हमीरपुर तथा धर्मशाला में आकाशवाणी केन्द्रों पर प्रसारण प्रारम्भ हो चुका है।

दूरदर्शन : आज के समय दूरदर्शन ने अन्य माध्यमों को पीछे धकेल दिया है फिर भी हिमाचल में इसकी पहुंच अभी तक कस्बों तक ही सीमित है। गांव में जनसाधारण अभी उस साधन को आसानी से प्राप्त नहीं कर पाया है। दूरदर्शन द्वारा विज्ञापन की शिक्षा प्रदान की जा रही है। कृषि के क्षेत्र में नई तकनीकों का प्रदर्शन किया जा रहा है। विज्ञापन बहुत लोकप्रिय हो रहे हैं। रोज़गार, कीमत, मौसम आदि की जानकारी के अलावा परिवार कल्याण कार्यक्रम नशेखोरी के विरुद्ध अभियान चलाकर सामाजिक व आर्थिक चेतना पैदा की जा रही है। लोगों में स्वास्थ्य दृष्टिकोण विकसित हो रहा है। राज्य में सोलन जिडले के कसौली स्थान पर एक बड़ा रिले केन्द्र कार्य कर रहा है। राज्य में मंडी-कुल्लू, धर्मशाला में छोटी शक्ति के रिले केन्द्र स्थापित किए जा रहे हैं, परन्तु अभी तक अपने कार्यक्रम तैयार करने के लिए स्टूडियो का निर्माण नहीं हुआ। यह काम जालन्धर केन्द्र कर रहा है।

(अ) निबन्धात्मक प्रश्न

- (1) परिवहन सेवाओं का अर्थ, आवश्यकता व आर्थिक महत्त्व बताइये।
- (2) हिमाचल प्रदेश में परिवहन के मुख्य साधनों का वर्णन करो।
- (3) सड़कों की प्रगति एवं भावी कार्यक्रम पर प्रकाश डालिए।
- (4) संचार के प्रमुख साधनों का वर्णन करो।

(ब) लघु उत्तर प्रश्न

- (1) हिमाचल प्रदेश में रेल मार्ग कहां से कहां तक हैं। बताइए।
- (2) हिमाचल प्रदेश में वायु सेवा कहां-कहां उपलब्ध है ? लिखो।
- (3) हिमाचल प्रदेश में टेलीफोन सेवा पर नोट लिखो।
- (4) दूर-दराज जन-जातीय क्षेत्र में संचार सेवाओं का वर्णन करो।
- (5) रेडियो व दूरदर्शन आर्थिक विकास में सहायक है। क्या आप इससे सहमत हैं ? अपने पक्ष में तर्क दीजिए।

(स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

रिक्त स्थान भरो

- (i) राज्य में सड़कों की लम्बाई कि०मी० है।
- (ii) कांगड़ा का हवाई अड्डा में है।
- (iii) लाहौर में पहला डाक घर सन् में खोला गया।
- (iv) किन्नौर व लाहौल-स्पिति में संचार का प्रमुख साधन है।
- (v) आकाशवाणी का केन्द्र में स्थित है।

सही (✓) व गलत (x) के चिन्ह लगाओ

- (i) जन जातीय क्षेत्र में संचार के कोई भी साधन नहीं हैं।
- (ii) काल्पा व लाहौर से टेलीफोन पर सीधा सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है।
- (iii) नंगल व ऊना के बीच रेल मार्ग चालू हो गया है।
- (iv) पठानकोट व जोगेन्द्रनगर के बीच रेल मार्ग है।
- (v) 1990 तक राज्य के सभी गांव सड़क से जुड़ जायेंगे।

